(प्रेरक व्यक्तित्व)

अरुणिमा सिन्हा : एक बुलंद क़ामयाबी का नाम

ख़ुदी को कर बुलंद इतना कि हर तक़दीर से पहले
ख़ुदा बंदे से ख़ुद पूछे बता तेरी रज़ा क्या है...

अल्लामा इक़बाल का यह शेर अरुणिमा सिन्हा पर सौ फीसदी जमता है। अरुणिमा सिन्हा नाम को ख़बरों में ज़रूर देखा जा सकता है, लेकिन ख़बर से भी बड़ा उनका प्रेरणा देने वाला व्यक्तित्व है। उनकी आवाज़ और अनुभवों में वे सब बातें मौजूद हैं, जो किसी भी व्यक्ति के लिए संजीवनी से कम नहीं। वह बुलंद एवरेस्ट पर चढ़ने वाली पहली दिव्यांग भारतीय महिला हैं। यह गौरव उनके नाम से दर्ज़ है।

रोज़ ही अख़बारों में ज़िंदगी से हारे हुए लोग अपनी ज़िंदगी का वास्तविक महत्त्व समझे बिना उससे मुँह मोड़ लेते हैं। मुश्किलें उनकी ज़िंदगी पर जीत हासिल कर लेती हैं और वे हारे हुए लोग मौत में आज़ादी को पाने की नाकाम कोशिश करते हैं। नेशनल हेल्थ प्रोफाइल के अनुसार भारत में आत्महत्या की दु:खद घटनाएं बड़ी तेज़ी से आगे बढ़ रही हैं। आंकड़ों के मुताबिक साल २००० से २०१५ के बीच आत्महत्या के मामलों में २३ फीसदी की बढ़ोतरी हुई। इसी तरह के और भी आंकड़ों की संख्या को इंटरनेट पर देखा जा सकता है। ये आंकडें यह भी बताते हैं कि यह समस्या गंभीर है। युवा बनते हुए भारत में यह एक चिंता का विषय भी है।

इसलिए इस माहौल में अरुणिमा की चर्चा करना और भी ज़रूरी हो जाता है। सन् २०११ का वह न भूलने वाला सफ़र सुनना भी बहुत मुश्किल है, पर अरुणिमा अपनी विभिन्न चर्चाओं में उस घटना को याद करती हुई उस दर्द को फिर से जीने लगती हैं, जो किसी के भी रोंगटे खड़े कर दे। लखनऊ से दिल्ली आती हुई पद्मावती एक्सप्रेस के जनरल डिब्बे में कुछ बदमाशों ने उनकी सोने की चेन खींचने की कोशिश की। अरुणिमा ने इसका ज़ोरदार विरोध किया। वहाँ मौजूद लोगों ने आगे आकर उनकी कोई मदद नहीं की। अरुणिमा को चलती ट्रेन से नीचे फेंक दिया गया और वह रातभर तड़पती रहीं। करीब ४९ ट्रेन उनके पैरों को रौंदते हुए गुज़रीं। बरेली डिस्ट्रिक्ट में बिना बेहोश किए उनका इलाज हुआ। आज जो अरुणिमा हमारे सामने दिखती हैं, वे पुरानी अरुणिमा से और भी मज़बूत अरुणिमा हैं।

अरुणिमा की कहानी में दर्द की महत्वपूर्ण भूमिका है। फिर चाहे वह शरीर के अंगों से जुड़ा दर्द हो या मानसिक दर्द। दर्द आदमी को घुटने के बल बिठा देता है, लेकिन अरुणिमा के मामले में इसी दर्द ने उनको फौलादी हौसले से भर दिया और आगे जो उन्होंने किया वह उनके नाम से इतिहास के पन्नों में अंकित हो गया।

अरुणिमा अपने शब्दों में बताती हैं कि अस्पताल में उन्होंने ख़बर देखी कि इस पूरी दुर्घटना में सारा आरोप उन पर ही थोपा जा रहा था। उनके घर के लोगों ने पूरी सफाई भी दी पर इसका कोई फायदा नहीं हुआ। अस्पताल के बेड पर लेटे हुए उन्होंने एक फैसला किया कि वह अपने काम से सबको इसका जवाब देंगी।

वॉलीबॉल की नेशनल चैंपियन ने उस रोज़ अपने लिए और भी कठिन काम चुना और वह था – पर्वतारोहण (माउंटेनियरिंग) का। वाज़िब है यह उनके लिए आसान नहीं था, क्योंकि उन्होंने इस दुर्घटना के बाद अपना एक पैर खो दिया था। दूसरे पैर में एक रॉड थी। इसके अलावा उनकी रीढ़ की हड्डी में भी फ्रैक्चर था। जब उन्होंने माउंट एवरेस्ट पर चढ़ाई की बात लोगों के बीच रखी तो हौसला तो कम मिला, उसके बदले में उन्हें कई सलाहें दी गईं। यह भी कहा गया – "पागल तो नहीं हो गई हो? इस हालात में कैसे कर सकती हो?..."

लेकिन सच्चाई तो यह है कि अरुणिमा यह समझ गई थीं कि ज़िंदगी अपने आप में वह तिलिस्म है, जो कुदरत ने इंसान को बेमिसाल तोहफ़े के रूप में दिया

ISSN 2581-9917

है। वह अपनी बातों में इस बात का ज़िक्र बड़े ही निराले अंदाज़ में करती हैं। वह कहती हैं कि उनकी अंतरात्मा ही उनकी सबसे बड़ी मार्गदर्शक साबित हुई। लोग शरीर और उसकी मुश्किलें देख रहे थे लेकिन अरुणिमा अपनी आत्मा और दिमाग की ताक़त को समझ चुकी थीं। यह अपने आप में मज़बूत शख्सियत की पहचान है।

अरुणिमा के अनुभवों को सुनने में वह ताक़त मिलती है, जिसकी हम सभी को ज़रूरत होती है। उनके परिवार ने उनके एवरेस्ट फ़तह करने के फैसले का साथ दिया और साथ ही वह सीधे बछेंद्री पाल से मिलने पहुँची। बछेंदी पाल ने भी उनकी हौसला आफजाई की और उन पर यकीं किया। विश्वास एक ऐसा भाव और शब्द है जो खुद के अंदर वह लौ जगा देता है जिसके बल पर इंसान अपने अंदर की ताक़त को समझता है। अरुणिमा को भी अपने पर विश्वास था। और अंत तक इसी विश्वास ने उनका साथ भी निभाया।

क्या एवरेस्ट समिट उनके लिए आसान रहा? कतई नहीं। उनके खुद के अनुभवों में वे बताती हैं कि टीवी पर या फोटो में यह सब बहुत अच्छा लगता है, पर जब ज़मीन पर उतारा जाता है तब असली चुनौतियों से सामना होता है। उन्हें कई घंटे लग जाते थे फील्ड में। इसके अलावा नीली और हरी बर्फ में उनका कृत्रिम पैर फिसल जाया करता था। यहाँ तक कि उनके शेरपा जो उनकी मदद के लिए थे, ने भी कहा कि इसके चलते तो उनकी जान भी जा सकती है। लेकिन अरुणिमा की ज़िद जो अब उनकी दृढ़इच्छाशक्ति का स्वरूप धारण कर चुकी थी, हार मानना नहीं चाहती थी।

एवरेस्ट समिट में वे रात के समय चढ़ाई करती थीं, क्योंकि उसी समय मौसम अपना मिजाज़ शांत रखता था। वे बताती हैं कि जब उनके सिर पर लगी हेडलाइट कहीं घूमती तो वहाँ लोगों के शव नज़र आते थे। वे यह सब देखकर डरती भी। लेकिन फिर उन्होंने ने अपने मन से कहा कि अगर यह लोग एवरेस्ट फ़तह नहीं कर पाए तो इन सब के लिए वे खुद फतह करेंगी और जिंदा वापस लौटेंगी। यह अपने आप में उनके मजबूत मन की मिसाल है।

वह पल भी आया जब उन्होंने ऑक्सीजन ख़त्म होने की कगार पर भी एवरेस्ट को पा लिया। एक जोख़िम भरा फैसला लिया और अपने तिरंगे के साथ एक फोटो भी खिंचवाई। उन्होंने अपने शेरपा से एक वीडियो भी बनाने की बात कही। उनका कहना था कि अगर वे जिंदा नहीं भी पहुँचती तो यह वीडियो भारत में उनके युवा साथियों तक पहुँचा देना। वह दिन २१ मई २०१३ का था जब वह विश्व के शिखर पर थीं।

अरुणिमा की कहानी किसी जादुई कहानी से कम नहीं है। इस कहानी में उनके हौसले, उनके दृढ़निश्चय और जुनून ने उनको इतिहास में एक ऐसे चरित्र में बदल दिया जो एक प्रेरणा का स्रोत बन चुकी हैं। उन्होंने यह साबित किया कि शरीर के अंग की कमी, लड़की होना और मध्यम वर्गीय परिवार से ताल्लुक रखना, कुछ भी आड़े नहीं आ सकता। बस मन में एक फैसला हो और अपने लक्ष्य को पाने की प्रबल इच्छा हो, फिर सब कुछ संभव हो सकता है।

अरुणिमा सिन्हा ने 'बोर्न अगेन ऑन द माउंटेन (२०१४)' नामक किताब भी लिखी है, जिसमें उन्होंने अपने बेमिसाल अनुभवों को समेटा है। अरुणिमा की ज़िंदगी का सफ़र हम सभी के लिए एक प्रेरणा का कैनवास रचता है। आज के दौर में वह एक ज़रूरी क़िरदार बनकर उभरी हैं, जो हर पल हार न मानने की बात कहता है।

उनके अनुभव लोगों के मन में दस्तक देते हैं - हार कर न बैठने की। राजेश रेड्डी की इन पंक्तियों से अरुणिमा अपने व्यक्तित्व की झलक देती हैं। इन पंक्तियों को वह कई टॉक शो में कहती हुई नज़र आती हैं -

अभी तो इस बाज़ की असली उड़ान बाक़ी है,
अभी तो इस परिंदे का इम्तिहान बाक़ी है।
अभी-अभी मैंने लांघा है समुद्रों को,
अभी तो पूरा आसमान बाक़ी है।।

ज्योति
शोधार्थी
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय।

(टिप्पणी- प्रस्तुत लेख इंकटॉक्स.कॉम में अरुणिमा सिन्हा द्वारा कही गई बातों के आधार पर लिखा गया है।)